षिक्षा में गुणवता

MRS. PINKI DALAL
Prof. Hindi Vaish Arya Kanya Mahavidyalaya Bahadurgarh
Distt. Jhajjar (Haryana)

जब हम षिक्षा की बात करते है तो सामान्य अर्थोमें यह समझा जाता है कि इसमें हमें वस्तुगत ज्ञान प्राप्त होता है। जिसके बल पर हम रोजगार प्राप्त कर सकते है।समाज और देष के लिए इस ज्ञान का महत्व भी है। क्योंकि षिक्षित राश्ट्र ही भविश्य संवारने में सक्षम हो सकता है। आज कोई भी राश्ट्र विज्ञान की महता को अस्वीकार नहीं कर सकता, जीवन के हर क्षेत्र में इसका उपयोग है।

षिक्षा मानव समाज के लिए एक ऐसा साधन हैं जो किसी भी राश्ट्र की आर्थिक व सामाजिक स्थिति को सुधार सकता है। षिक्षा मानव समाज में सुधार लाने में एक अह्म भूमिका निभाती है। षिक्षा के माध्यम से ही मनुश्य को सोचने समझने की क्षमता का विकास होता है या यूं कहे कि उनकी विष्लेशण व तार्किक क्षमता का विकास होता है। षिक्षा से ही मनुश्य का आत्मविष्वास बढ़ता है ।

षिक्षा का अर्थ सिर्फ पाठ्य पुस्तकें पढ़ना ही नहीं हैं।षिक्षा में पाठ्य पुस्तकों के साथ–साथ सीखने की प्रक्रिया भी षामिल है। षिक्षा व्यक्तिगत स्तर को तो उच्चा उठाती ही है, साथ ही साथ एक षिक्षित व्यक्ति समाज को बदलने की क्षमता भी रखता है।

''वर्तमान में षिक्षा का अधिकार, भारतीय सविधान द्वारा यह मौलिक अधिकार घोशित कर दिया गया है। षिक्षा के मौलिक अधिकार के अन्तर्गत राज्य द्वारा 6 से 14 वर्श के आयु के बच्चों को निःषुल्क षिक्षा प्रदान की जाएगी''[1]।

ये तो बात हो गई षिक्षा की लेकिन क्या हमारी षिक्षा में वो गुणवता रह गई है जिस षिक्षा की हम सदियों पहले उदाहरण दिया करते थे। क्या हमारी षिक्षा छात्रों में नैतिक मूल्यों की स्थापना कर पाती है। सदियों से भारत की संस्कृति नैतिक मूल्यों व गुणों से परिपूर्ण रही है। हमारी संस्कृति नैतिक आचार विचार व व्यवहार का पालन करने के लिए सदैव प्रेरित करती रही है।

आज हम जब षिक्षा संस्थानोंमें जाते है तो क्या देखते है, गुरु और षिश्य का जो पवित्र रिष्ता होता था वो आज धुंधला सा दिखाई देता है। भारत में गुरु व षिश्य का रिष्ता तो बड़ा पवित्र है, जिसका दुनिया में उदाहरण दिया जाता है। भारत में गुरु को भगवान से भी बड़ा स्थान दिया जाता हैं। कबीर दास जी कहते है –

''बलहारी गुरु आपणै धौहाड़ी कै बार

जिनि मानुश तै देवता करत न लागी बार''[2]

लेकिन आज हमारी उच्च षिक्षा में नैतिक मूल्यों की गिरावट आई है। आज छात्र मोबाईल फोन में लगे रहते है, कहीं कोई दुर्धटना हो जाती है तो छात्र उसकी सहायता करने की बजाए उसकी फोटो फैसबुक पर अपलोड करने में लग जाते हैं। ये नैतिक मूल्यों में गिरावट नही तो क्या है

षिक्षा में सुधार के लिए हमें वर्तमान षैक्षिक उद्देष्यों को भी पुनरीक्षित करना होगा। षिक्षा महज परीक्षा पास करने या नौकरी पाने का साधन नहीं है। षिक्षा विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास, अन्तर्निहित क्षमताओं के विकास करने और स्वथ्य जीवन निर्माण के लिए भी जरूरी हैषिक्षा प्रत्येक बच्चें को श्रेश्ठ इन्सान बनाये व बनने की और प्रेरित करे, तभी वह सही मायने में सार्थक सिद्ध हो सकती है। कहा भी गया है '' सा विद्या या विमुक्ते।'' हम देखते है कि पढ़े–लिखे और कम पढ़े–लिखे व्यक्ति के आचरण और चरित्र में कोई खास अन्तर दिखाई नहीं देता। उल्टे पढ़–लिख लेने के बाद व्यक्ति श्रम से जी चुराने लगता है, और अनेक प्रकार के बुरे आचरण में लिप्त हो जाता है।

यह स्थिति एक प्रकार से असफल षिक्षा पद्धति को दर्षाती है। अतः यह जरूरी है कि षिक्षा के उद्देष्य को पूरा करने के लिए षिक्षा को पुनरीक्षित किया जाए

आज षिक्षा के क्षेत्र में वास्तविक सुधार की दृश्टि से षीध्र ही सार्थक कदम उठाने चाहिए, और ऐसी षिक्षा पद्धति विकसित करनी होगी जो बच्चो के मन में श्रम के प्रति निश्ठा पैदा करे।

षिक्षार्थी के जीवन में नैतिक मूल्यों परक उच्च षिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान है, क्योंकि नैतिक मूल्यों वाली उच्च षिक्षा लोगों को अवसर प्रदान करती है जिससे वे मानवता के सामने आज षोचनीय रूप से उपस्थित सामाजिक, आर्थिक,सास्कृतिक,नैतिक और आध्यात्मिक मसलों पर सोच–विचार कर सके। अपने विषिश्ट ज्ञान और कौषल के प्रसार द्वारा उच्च षिक्षा राश्ट्रीय विकास में योगदान करती है। इस कारण हमारे अस्तित्व के लिए महत्वपूर्ण हैं।[3]

बढ़ती हुई षिक्षा प्रणाली समाज के लिए तभी लाभकारी होगी जब षिक्षा में गुणवता होगी। षिक्षा की गुणवता में सबसे बड़ी अड़चन देष में षिक्षकों की भारी कमीं भी है। जब भी हम षिक्षा की गुणवता पर विचार करते है तो हमेषा दो षिक्षण संस्थाओं में प्राप्त षिक्षा को आधार बना कर ही उसकी श्रेश्ठता के अन्तर को ही अभिव्यक्त करते है और षायद हमेषा ही करते रहेगें। एक बच्चा जो कक्षा में अच्छे अकों को प्राप्त करता है, उस बच्चें के विशय में यह मान लिया जाता है कि उसने स्कूल में ज्यादा सीखा है जिस षिक्षा संस्थान के सब बच्चों के प्राप्ताकों का कुल योग अधिक होता है, उसके विशय में यह मान लिया जाता है कि यह अपने विद्यार्थियों को बेहतर षिक्षा उपलब्ध कराते है।यह हमारी सोच है जो षिक्षा की गुणवता की परख करती है।

षिक्षा अनिवार्यतः है, अप्रतिस्पर्धात्मक गतिविधि है। लेकिन जब हम प्रतिस्पर्धा पर जोर देते है तो इसका उद्देष्य विकृत हो जाता है और यह प्रतिस्पर्धा विद्यार्थी को उस दिषा में ले जाती है जहा न तो बोद्धिक चिंतन महत्वपूर्ण रह जाता है, और न ही चारित्रिक गुणों का विकास हो पाता है। जिसके फलस्वरूप बच्चों में आत्महत्या की प्रवृति जन्म लेती है। यह हमारी षिक्षा व्यवस्था के असफल संकेत है।

''1986 की राश्ट्रीय षिक्षा नीति में एक ऐसी राश्ट्रीय षिक्षा प्रणाली तैयार करने का प्रावधान है जिसके अन्तर्गत षिक्षा में एकरूपता लाने, प्रोढ़ षिक्षा कार्यक्रम को जन आंदोलन बनाने, प्राथमिक षिक्षा की गुणवता बनाए रखने, बालिका षिक्षा पर विषेश जोर देने, माध्यमिक षिक्षा को व्यवसायपरक बनाने, उच्च षिक्षा के क्षेत्र में विविध प्रकार की जानकारी देने और अंतर अनुषासनिक अनुसंधान करने, राज्यों में मुक्त विष्वविद्यालय की स्थापना करने'' [4] लेकिन इन सब के बावजूद षिक्षा की हालत खराब है।

अतः षिक्षा हर क्षेत्र में महत्वपूर्ण है। परंतु जीवन में केवल षिक्षा ही महत्वपूर्ण नहीं है। यदि षिक्षा का अध्ययन आवष्यक है राश्ट्र की आर्थिक दषा सुधारने केलिए तो जीवन में मूल्यों का उपयोग कर हम उन्नति की राह चुन सकेगें।भारत सरकार आजकल षिक्षा पर अत्यधिक जोर दे रही है। लेकिन वास्तविकता यह है कि अब समय ऐसा आ गया है कि अब षिक्षा के प्रचार की बजाए षिक्षा की गुणवता पर ज्यादा ध्यान देना आवष्यक है जिससे कि हम आने वाली पीढ़ी में नैतिक मूल्यों की स्थापना कर सके।

प्रस्तुतकर्त्री

श्रीमति पिंकी

प्राध्यापिका हिन्दी विभाग

वैष्य आर्य कन्या महाविद्यालय

बहादुरगढ़

संदर्भ सूची –

1ण उदयोन्मुख भारतीय समाज में षिक्षक–पृश्ठ 36
2ण कबीर ग्रन्थावली, ष्याम सुन्दरदास पृश्ठ 53
3ण राश्टीय षिक्षा नीति 1986
4ण हम और हमारी षिक्षा, हरि चन्द्र व्यास–पृश्ठ 22